

॥ दत्त दयध्वम् दाम्भ्यतु



1001



यत् भावो तत् भवति



मिहिराज जग जेवु  
प्रमद भगवत  
जगदीश के जगद्वज  
विवाद एव जगद्वज  
पुलकान जग जेवु  
महर्षि विराजमान  
सुदनीश जग जेवु  
है नभ रेखनले



